

तस्योत्तरैर्नैत्रेणालं हैलडत्यादिना ॥२॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

भीष्म उवाच ॥ हंतैकथयिष्यामि पुरा ब्रूते महाद्युते ॥ नहुषस्य च संवादे महर्षेऽभ्यवनस्य च ॥ २॥ पुरामहर्षि ॥ अवनो भार्गवो भरतर्षभ ॥ उदवासकृतारं भो बभूव समहाव्रतः ॥ ३॥ निहत्यमानं क्रोधं च प्रहर्षं शोकमेव च ॥ वर्षाणि द्वादश मुनिर्जलवासो धृतव्रतः ॥ ४॥ आदधत्स वै भूतेषु विश्रंभं परमं शंभं ॥ जले च रेखुसं वै बुद्धीतरश्मि रिव प्रभः ॥ ५॥ स्थाणुभूतः शक्रिर्भूत्वा देवतेभ्यः प्रणम्य च ॥ गंगायमुनयोर्मध्ये जलं संप्रविचेष्टाह ॥ ६॥ गंगायमुनयोर्वेगं स भीमं भीमनिःस्वनं ॥ प्रतिजग्राह शिरसा वातं वेगसमं जवे ॥ ७॥ गंगा च यमुना चैव सरितश्च सरं सिच ॥ प्रदक्षिणामृद्धिं च क्रुर्न चैनं पर्यपीडयन् ॥ अंतर्जलेषु सुष्वापकाष्ठभूतो महासुनिः ॥ ततश्चोर्ध्वस्थितो धीमानभवद्भरतर्षभ ॥ ८॥ जलौकं सोऽस सत्त्वानां बभूव प्रियदर्शनः ॥ उपनिघ्नं तच्च तदा तस्योष्ठं हृष्टमानसाः ॥ ९॥ तत्र तस्यासतः कोलः समतीतो भवत्कमहान् ॥ ततः कदाचि स मेये कस्मिंश्चिन्मस्य जीवनः ॥ १०॥ तं देशं समुपाजग्मुर्जीलहस्ता महाद्युते ॥ निषादा बहस्तत्र मस्योद्धरणानिश्चयाः ॥ ११॥ व्यायता बलिनः शूराः सलिलेष्वनिवर्तिनः ॥ अभ्याययुश्च तं देशं निश्चिता जालकर्मणि ॥ १२॥ जालं ते योजयामासुर्निःशोषेण जनाधिप ॥ मत्स्योदकं समासाद्य तदा भारत सत्तम ॥ १३॥ ततस्ते बहुभिर्योगैः कैवर्ता मत्स्यं कांक्षिणः ॥ गंगायमुनयोर्वीरिजालैरभ्युकिरंस्ततः ॥ १४॥ जालं स्फुवितं तेषां नवस्तत्र कृतं तथा ॥ विस्तारायामसंपन्नं यत्तत्र सलिलेऽक्षिपन् ॥ १५॥ ततस्ते स्फुमहश्चैव बलवच्च स्फुवर्तिनः ॥ अवतीर्य ततः सर्वे जालं च कृषिरेतदा ॥ अभीतरूपाः संहृष्टा अन्योन्यवचावर्तिनः ॥ बवंधस्तत्र मत्स्यांश्च तथा त्याग्य जालचारिणः ॥ १६॥ तथा मत्स्यैः परिवृतं च वनं भृगुनंदनं ॥ आकर्षयन्महाराज जालेनाथयदृच्छया ॥ १७॥ नदीं शोचलदिग्धं गंहरि श्मश्रुजटाधरं ॥ लभेः शंखनखैर्गोत्रेऽक्रोहेऽश्विरेरिवापितं ॥ १८॥ तं जालेनोद्धृतं दृष्ट्वा नेतदा वेदपारगं ॥ सर्वं जालयोदाशाः शिरोभिः प्रापत श्मवि ॥ १९॥ परिखेद परित्रासा जालस्याकर्षणेन च ॥ २०॥ समुनिस्तदा हृत्स्वामत्स्यानां कदनं कृतं ॥ बभूव कृपया विष्टो निःश्वसंश्च पुनः पुनः ॥ २१॥ निषादा ऊचुः ॥ अज्ञानाद्यत्कृतं पापं प्रसादं तन्नः कुरु ॥ करवामप्रियं किं ते तन्नो ब्रूहि महासुने ॥ २२॥ इत्थं को मत्स्य मध्यस्थश्च वनो वाक्यमब्रवीत् ॥ यो मे ह्यपरमः कामस्तं भृणुष्वं समाहितः ॥ २३॥

शंखा नोजलजं लु विप्रोषाणां नस्वानितैः ॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥